पिता की याद में

मैं बेटी हूं स्वतंत्रता-सेनानी की,
देशभक्त त्यागी, बलिदानी की।
तेजपुंज, सरल, स्वाभिमानी की,
शोणित में उबाल था, भाव में प्रवाह था।
राष्ट्रभक्ति का उन्माद था, अदम्य-साहस था।
वाणी में ओज था, नयनों में अंगार था,
प्रकम्पित भुजदण्ड थे, प्रशस्त दिव्य-भाल था।
कुछ कर गुजरने का जज्बात था,
जेल की काल-कोठरी में भी जिन्दादिली बेमिसाल थी।
पग-तल के शूल भी जिसके लिए फूल थे,
अंगारे भी जिसके लिए शीतल नीर थे।
कोड़े भी जिसके लिए पुष्पमाल थे।
बिछोह भी जिनके लिए वरदान था।
फिरंगियों के हौसले को पस्त करने का उन्माद था।
भूख-प्यास नगण्य था, जीने का नया अंदाज था,
नींद भी जिनसे कोसों दूर थी, देह की कहां फिक्र थी।
कंटक-सैया भी जिसके लिए मखमली सेज था,
मंजिल पाने का एक मात्र दृढ़-संकल्प था।
स्नेह, प्रेम, त्याग, दया की पावन-गंगधार थे,
कठोरता में भी सरलता की प्रतिमूर्ति थे।
कर्मठ, निर्भीक, अहंकार-शून्य व्यक्तित्व था,
वैभव, शोहरत का पाश कभीभी जिन्हें न बांध सका।
ऐसे निर्बन्ध, ज्ञानी, सदाचारी, दिव्यात्मा महापुरुष थे,
सपने भी देखा करते थे जो देश की आजादी का,
अमन-चैन, जिन्दादिली, भाईचारा, खुशहाली का।
पिता के पगचिह्नों पर चलना ही मेरे जीवन लक्ष्य है,
मैं जहां कदम रखूं अनगिनत प्रेम-दीप झिलमिला उठे।

माँ

माँ तुमसे ही है मुझमें,
अनंत ऊर्जा का संचार।
तुम्हरा स्नेहिल स्पर्श करता,
मेरे जीवन का कल्याण।
माँ तुम ममतामयी, उदारमना,
करती मुझपर सर्वस्व दान।
पा तुम्हारा नि:स्वार्थ प्रेम,
खोलता मेरे जीवन का हर द्वार।
माँ तेरे आशीष की घनेरी छाया में,
पलता है अबोध, असहाय, शिशु, लाचार।
तुमसे ही है मेरी पहचान,
तुममें है अनंत गगन का विस्तार।
माँ तुम हो सदा महान,
तू करुणामई गंगधार।
स्नेहसिक्त ऊर्जा से सिंचित,
करती बल, बुद्धि ज्ञानविस्तार।
माँ तुम जाड़े की गुलाबी गुनगुनी धूप,
तुम तप्त रेगिस्तान में सलिल धार।
तुम ग्रीष्म ताप संतप्त धरा पर,
सावन की रिमझिम फुहार।
तुम हो धरा सम धीर गंभीर,
तुम्हारे आँचल की छाँह में,
पलते राम, कृष्ण, बुध, ईशा महान।
माँ तुम हो कुरान पाक,
तुम वेद ऋचा, रामायण,
गीता का गंभीर पावन ज्ञान,
तू अजश्र अमृत धार।
माँ तुम बैकुण्ठ का पावन द्वार,
तुम तिमिर निशा का रौशन चिराग,
तुम हो शरद कालीन पूर्णिमा का चाँद,
तुम शीतलता का आगार अनंत।

पहचानो मुझे

मैं कौन हूं?पहचानो मुझे,
मैंअजर अमर परमात्मा हूँ।
मैं जरा-मरण से सर्वदा मुक्त,
मैं अनन्त, अखंड अगोचर हूँ।
मैं इस सृष्टि का बादशाह हूँ,
मैं ही कर्मानुसार सुख-दुख का कारक हूँ।
मैं सृजन का उन्माद हूँ, प्रलय का विलाप हूं।
मैं उत्थान का आनंद हूं, पतन का संताप हूं,
मैं विजय की पताका हूं, पराजय का शाप हूँ,
मैं जन्म का उल्लास हूँ, मरण का मातम हूं।
मैं रवि का प्रकाश हूं, चंदा की चांदनी हूं,
मैं जल की शीतलता हूं, मैं मरूभूमि का ताप हूं।
मै गगन का विस्तार हूं, मैं अर्णव की गहराई हूं,
मैं धरती की हरीतिमा हूं, मैं फूलों की खुशबू हूं।
मैं ग्रीष्म की तपन हूं, मैं शीतल बसंती बयान हूं,
मैं पवन का बेग हूँ, जीवन जीने का आधार हूं।
मैं तरु गुल्म हूँ, मानव के जीने का आधार हूं,
मैं सृष्टि का उत्पत्ति कर्ता एवं विध्वंस कर्ता हूँ।
मैं आनंद का मधुमास हूँ, विषाद की अंधेरी निशा हूं,
मैं श्रद्धा, भक्ति, प्रेम का आनंद हूं, विश्वास का वरदान हूं।
मैं सुर, लय, ताल, छंद हूँ, मैं पायल की झंकार हूँ।
मैं संगीत हूं, नृत्य हूं, नाद हूं, ब्रह्मानंद हूं,
मैं हूं अखिल विश्व में या यह अखिल विश्व मुझ में,
मैं जग का पालक, उद्धारक, मैं ही मुक्ति दाता हूँ।

बेखौफ जिन्दगी

बेखौफ जी रहे हम, खौफ के गहराते साये में,
साँसों की डोर को बस, प्रभु! तुम ही हो सम्हाले।

दोधारी तलवार के बीच से गुजर रही है जिन्दगी,
प्रभु तेरी ही कृपा से, सबकुछ सलामत है हमारा।

डगमगाते हैं कदम जब भी हमारे, बाँह पकड़ तूने ही उठाया,
पग में पड़े हों जब भी छाले, हौसला तुमने ही बढ़ाया।

एक तेरा ही भरोसा देता है हम सबको दिलासा,
जब-जब मैं इत-उत भटकूं तू ही राह दिखाता।

तिमिर का जब पहरा हो गहरा, चिराग तू ही जलाता,
प्रभु! चमत्कार कुछ दिखा ऐसा, विश्वास बना रहे हमारा।

मेरे प्रभु

शब्द नहीं है मेरे पास,
कैसे करूं तेरे गुणों का बखान।
तुम हो शब्दातीत, गुणातीत प्रभु मेरे,
तुम हो अनन्त, अखंड अनामय।
नाथ तुम हो संपूर्ण कलाधर,
जगत के कारक सच्चिदानंद।
तुम हो त्रिकालदर्शी, अविनाशी,
तुम हो घट-घट व्यापी अलख निरंजन।
सृष्टि के कण-कण में है एक तेरा ही नूर समया,
हर आस में तू, हर सांस में तू,
हर सांस है ऋणी तेरा।
तू जरा मरण से मुक्त अजर, अमर, संशयहरण,
तुम प्रेम, सेवा, त्याग,
दया, कर्म, विश्वास के हो अधीन ।

भक्ति गीत

नाथ सकल सुख भक्ति में तिहारो,
दूजा ना कोई अवलंब हमारो।
तुम ही हो दुख भंजन हमारो,
बेरा पार लगाओ अब हमारो।
मैं अधम पापी आया द्वार तिहारो,
हे करुणा निधान दुःख हरो हमारो।

करूणा कर करूणामयी

जगदम्बे करुणा कर, करुणामयी
अम्बे भयहारिणी, दयामयी
जय हो चण्डिके, अम्बिके, जगदम्बे
शुम्भ-निशुम्भ हन्त्री, शक्तिमयी
अम्बिका, जगतारिणी, कल्याणमयी
जय हो चण्डिके, अम्बिके, जगदम्बे
महिषासुरमर्दिनी, परमेश्वरी, जगतोद्धारिणी
जोतावाली, अज्ञाननाशिनी, त्रिकालदर्शिनी
जय हो, चण्डिके, अम्बिके, जगदम्बे
भद्रकाली, अहंकरनाशिनी, मोक्षदायिनी
चण्ड-मुण्ड विनाशिनी लोकोपकारकारिणी
महागौरी, कल्याणकारी, दयामयी
जय चण्डिके, अम्बिके, जगदम्बे।

सुन लो अरज हमारी

प्रभुजी ! सुन लो मेरी अरज इस बार,
विपदा में कब से पड़ा हूँ बेबस, लाचार।

मेरी नैया फंसी हुई है कब से मंझधार,
तेरे बिन कौन लगाए मेरा बेरा पार।

हे नाथ! सुन लो मेरी करूण पुकार,
बेकल मन को तुम बिन कौन धराये धीर।

नयनों से पल-पल बहता अविरल -नीर,
मैं हूँ अति दीन-दुखी, कातर, गंभीर।

हे ! करूणानिधान, जग के पालनहार,
नाथ ! तुम हो सबके खुशियों के आधार।